धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

फरवरी 2009

माता पिता संतान दिवस

नीच गतियों की भयानक रौ

क्या हम कृतज्ञ हैं?

उत्पीड़न और संकट सफलता की सीढ़ी

ज्योतिष विद्या झूठ का पुलिंदा

कितने-कितने कर्ज़

ईसाई जगत में मदर्स डे

ये है मां

कल्याण सत्संग

सन्मान के योग्य श्रीमान जी, 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़

सत्यदेव की जय,

विषय :- कल्याण सत्संग

आप को यह जान कर खुशी होगी कि पिछले तीस साल की तरह इस साल भी कल्याण मलेका (बठिण्डा) में यह सत्संग रखा गया है। इस बार इस सत्संग में माता पिता दिवस 12 फरवरी की रात से 15 फरवरी 2009 रविवार दोपहर तक रहेगा। माता पिता सम्बन्धी खास सभा। 15 फरवरी रविवार को रखी गई है।

कल्याण के लिए बठिण्डे से, मोगा, भगत से, रामपुरा और भूचों चौंक से सीधी बस मिलती है।

12 तारीख की सभा रात 7 बजे के करीब शुरू होगी, बाहर से आने वाली साथी आसानी से इसमें शामिल हो सकते हैं।

आप जी के ठहरने और भोजन आदि की सेवा की खुशी स्थानीय साथी सेवक हासिल करेंगे।

आपको इस शुभ अवसर पर अपने आप भी पहुंचना चाहिए और किसी के भले को सामने रख के औरों को भी साथ ले आना चाहिए।

आकर आपको पछताना नहीं पड़ेगा। बल्कि सौभाग्य महसूस होगा।

तिथि :24-01-2009 **आप का हिताकांक्षी**

फोन : 0172.2716914 **बलदेव सिंह मंत्री**

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 2

फरवरी 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नीच गतियों की भयानक रौ

मनुष्य आंखे रखकर बहुत अधिक तीक्ष्ण बुद्धि वा विद्या रखकर, बहुत सी और योग्यताएं रखकर भी अन्धेरे में रहता है। इस अन्धेरे और अज्ञानता का शिकार होकर सदा हानि, दुख और नाश उठाता है। अन्धेरा और अज्ञान अपने आप में ही दुख और हानि का प्रतीक हैं।

बहुत से मनुष्यों को तो मोटे पापों की भयानक लहरें भी नज़र नहीं आती, ठीक लिखा है, "पाप की लहरें, चहुं दिग जारी, डूबे जाते नर और नारी" परन्तु हम लोग जो देव धर्म की शरण में आ जाते हैं, हमें कुछ न कुछ मोटे पापों की लहरें तो नज़र आ जाती हैं, हम यह देखने के योग्य हो जाते हैं कि शरीर और अन्य नशों की रौ में बहकर कैसे मनुष्यों के जीवन गर्क हो रहे हैं, उनके घरों की सुख शान्ति भंग हो रही है, उनका धन और इज्ज़त बर्बाद हो रहे हैं। हम यह भी देखते हैं कि मांसाहार से जीवों का घात हो रहा है। खून के दरिया बह रहे हैं। हम यह भी देखने लगते हैं कि जुए के कारण कैसे बर्बादी आती है। रिश्वत कैसे बेकसूर जनों के खून पीने वाले सांपों से समाज को भर रही है। काम निकलवाने के लिए एक अनिवार्य साधन बन चुकी है। बलात्कारों की भरमार है। निकटी और पाक रिश्ते भी इस कारण, सुरक्षित नहीं हैं। दरिंदे मनुष्यों की हवस की शिकार हो, चार, पांच, सात की बच्चियां भी बन रही हैं। यहां तक कि बाप से बेटी सुरक्षित नहीं। यह दुखदाई घात प्रतिदिन अखबारों की सुर्खियों में है। यह पाप का सैलाब हमें कुछ दिखाई देता है, क्योंकि परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सेवकी ग्रहण करके हम इनसे बचने का सौभाग्य पा चुके हैं, परन्तु अधिकतर जनसंख्या इस पाप के सैलाब को देखने में असमर्थ है।

देवधर्म समाज के सेवक बनकर हमारे पाप कर्म खत्म नहीं हो जाते, कम ज़रूर हो जाते हैं। मोटे पापों पर ब्रेक ज़रूर लग जाती है। कुछ भला अवश्य हो जाता है। परन्तु हमारा नीच जीवन ज़रूर बना रहता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि हम मनुष्य धतूरे के पौधे हैं, ज़हर के पेड़ हैं, आठ पापों को छोड़कर हमारे पत्ते वा कांटे ज़रूर झड़ जाते हैं, परन्तु रहते हम धतूरे के पेड़ ही हैं।

सेवक बनकर, फिर उच्च श्रेणी में होकर, विकासार्थी बनकर, इस मिशन के वर्कर बनकर, उच्च पदों पर शोभित होकर प्रचारक बनकर हमारे पाप कर्म घटते तो जाते हैं, परन्तु हमारे नीच जीवन का क्रम चलता रहता है। आखिर यादि यह क्रम जारी रहे तो धीरे - धीरे हम उसे देखने में ही असमर्थ हो जाते हैं। हम अपने आपको ठीक - ठाक निर्दोष वा सुन्दर रूप में देखने की ओर अग्रसर हो जाते हैं और गलतफहमी का शिकार हो जाते हैं। इस भुलेखे और निज भ्रम के अन्धेरे में जीते - जीते जीवन यात्रा सम्पन्न करने के मार्ग पर पड़ जाते हैं। नीच जीवन की, स्वयं की नीच गतियों की भयानक रौ अदृश्य हो जाती है। हमारी मैं का अन्धेरा हमें घेरे रखता है। इस अन्धेरे को दूर करने का क्षेत्र केवल सत्य और शुभ से भरपूर अनुरागों से विकसित रोशनी का है। रोशनी हमारे सुख अनुरागों से बहुत परे की वस्तु है।

नीच सुखों की ओर झुक जाने वाली प्रकृति के कारण हमारा रूप कोयले जैसा हो गया है। दूध, दही साबुन, सोडा कोई वस्तु उस कालिख को दूर नहीं कर सकती। केवल तेज जलने वाली चिंगारी जिस कोने को छू लेती है, उस सम्पर्क से वह कोना काला रंग बदल कर लाल सुर्ख होने लगता है, परन्तु यदि वह सम्पर्क कट जावे तो फिर वह कालख पसरने लगती है।

अब देखना यह है कि नीच गतियों की वह कौन सी भयानक रौ है, जिसमें सुख अनुरागी मनुष्य, देवात्मा की शरण पाकर भी और उसमें रहकर भी और लाभ उठाकर भी फंसा रहता है।

स्वाददार वस्तुएं खाने का दास होकर मनुष्य बहुत कुछ ऐसा खाने के लिए तैयार रहता है और वह खाता रहता है, जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। क्लबों, होटलों में मिर्च मसालेदार खाकर, कई शूगर के मरीज़ होकर भी परहेज़ न करके मीठा और मिठाईयां न छोड़कर, कई बढ़े हुए Blood Pressure में भी नमक न छोड़कर, घर से बाहर खाना Status समझकर अपनी सेहत बर्बाद करते हैं। उपरोक्त सब क्रियाएं नीच गतियों की रौ ही हैं।

सुन्दर 2 कपड़ों का अत्यधिक शौक, फैशन पर ही सारा ध्यान कैंद्रित रखना, दिन में कई - कई बार कपड़े बदलना, सफाई, सुन्दरता सभ्यता की आड़ में यह सारी भाग दौड़ अकसर नीच गतियाँ ही होती हैं। इनके पीछे मान बड़ाई के सिवा और कुछ नहीं होता।

शरीर को शिंगारना, सजाना, मेकअप, नाखून बनाने और रंगने में, बिंदी, फैशियल आदि कामों में पूरा संग्राम सब नीच गतियों की ही रौ है। मान बड़ाई को लेकर पार्टियों और खाने, बर्थडे पार्टियों को ही Attend करने में लगे रहना, कोई creative काम न करना नीच गतियों की ही रौ है।

सिनेमा टी. वी. आदि में आधा पौना दिन बर्बाद कर देना। फिल्म, सीरियल, कोई अवार्ड प्रोग्राम, किसी अच्छे काम के लिए यह सब छोड़ न सकना नीच गतियां ही हैं।

बेवकत सोने, जागने के अभ्यास, अत्यधिक चाय, काफी, कोक, पेप्सी को महत्त्व देना, अपना अधिक समय गप्पों और हंसी मखौल

में ही बर्बाद कर देना, ताश खेलने की लत, यह सब नीच गतियां ही हैं।

केवल रूपये कमाने के लिए जोरदार संग्राम, 24 घण्टे यही बुखार, सोते जागते इसी का चक्कर, धन कैसे बढ़ सकता है, किससे क्या लाभ लिया जा सकता है, यही चिन्ताएं इन्हीं चक्करों में फंसे रहना, छोटी - छोटी बचतें करते धीरे - धीरे बेईमान बनते जाना, इस वा उस बहाने से किसी का हक मार लेना, सब नीच गतियां हैं।

अत्यधिक काम वासना का शिकार होकर पुरुष और स्त्रियों की आपस में ताक झांक, किसी के लिबास वा शारीरिक अंगों की तरफ मैली नज़र से देखना, गन्दी बातचीत वा मखौल करना, यह सब नीच गतियां हैं, जिनकी रौ में क्या नौजवान और क्या बूढ़े बहे जा रहे हैं।

घरों की सफाई, सजावट, बाथरूमों को सजाने, फर्नीचर को बदलने का अत्यधिक फिकर और इन्हीं चीजों में अपना अत्यधिक समय बर्बाद कर देना, अपने मन, अपने आत्मा की शुद्धता का कोई फिकर न करना नीच गति है।

झूठ और कपटता का एहसास न होना, झूठ और कपटता का खुले तौर पर प्रयोग, उच्च श्रेणियों में होकर भी मिथ्या चिन्ह रखना, कई प्रकार के मिथ्या सम्बन्धी अनुष्ठानों और विश्वासों में शामिल होना, मिथ्या पक्षपात रखना, स्पष्टता से दूर और कपटता से दूसरों की आँखों में धूल झोंकना, किसी के दुख का एहसास न होना, झूठ बुराई देखकर चुप रहना, "कपटता से बढ़कर रूह की हलाकत (घात) के लिए और कोई जहर नहीं" इस सचाई से आँखे बन्द रखना, नीच गति परायण जीवन का ही प्रमाण है।

पर सेवा, दान, प्रचार करके, परन्तु नीच भावों के द्वारा प्रेरित होकर अपनी भयानक नीच गतियों के प्रति संवेदनशीलता का पूर्ण अभाव, अपने आपको नीच जीवन धारी देखने के स्थान पर, सेवाकारी, त्यागी, दानी, प्रचारक समझने और दर्शाने का भ्रम, सब महा सूक्ष्म और महाघातक नीच गतियां है।

किसी की सच्ची वा झूठी निन्दा और अपनी या अपने से सम्बन्धित जनों की थोथी और अनावश्यक प्रशंसा करके मिथ्या, कपटता, उल्टी दृष्टि का शिकार होकर भी कोई संवेदनशील न होना और सचाई से कोसों दूर रहना, नीच गति करना है।

अहंकार, घमंड और उस नशे से भरकर जो कुछ हम सोचते हैं, बोलते हैं या क्रिया करते हैं, वह हमें पता लगे या न लगे नीच गतियां ही हैं। गुस्से की हालत में हमारी सोच, बोल और क्रियाएं सब नीच गतियां हैं। इसी प्रकार जिसका असाक्षात रूप से हम सब पर ही अधिकार रहता है, उसके अधीन जितनी सोच, वाणी और क्रियाएं हैं, सब नीच गतियां ही हैं। स्वेच्छाचारिता के अधीन हमारे आन्तरिक और बाह्यक कर्म नीच गतियां हैं। लोभी रहकर और होकर, मोह बन्धन के अधीन भी नीच गतियों की भरमार रहती है, हम जिनके साथ मोह बन्धन में बन्धे होते हैं, उनकी अनुचित मांगे पूरी करके खूद भी नीच बनते हैं और दूसरों को नीच गतियां करने की ओर धकेलते हैं। सेवा और हानि

परिशोध के भावों को बढ़ाने के साधन न करना भी नीच गतियां हैं।

चारों 'स' अर्थात साधन, सेवा, सत्संग और स्वाध्यायन से उदासीनता या लापरवाही भी नीच गति ही है। गुरु महाराज ने हमारी प्रकृत अवस्था इस प्रकार बताई है :-

"मनुष्य अपने भीतर के इन नीच अनुरागों, अपने भीतर की इन नीच घृणाओं के कारण भिन्न-भिन्न झूठ घड़ता है। और उनकी पैरवी करके झूठा, मक्कार, धोखेबाज़, जालसाज़, बेवफा, बदअहिद (वायदा खिलाफी) कर्त्तव्य विहीन बनता है।"

नीच सुख अनुरागी होना, पाप और झूठ परायण होना या नीच गति परायण होना एक ही बात है। जैसे देवात्मा शुभ के स्रोत हैं, वैसे हम मनुष्यात्मा पाप के स्रोत हैं। हमारे भीतर से अधिकतर नीच गतियों का ही प्रसार होता है।

अपने उक्त प्रकृत रूप को ठीक ठाक जानने और अनुभव करने की अतिशय आवश्यकता है। इसके बिना हानि दुख और नाश से बचना असम्भव है। इसमें उपरोक्त चारों 'स' का पालन बहुत सहायक सिद्ध होता है। तभी अपने आपको दिखाने वाली ज्योतिप्रद प्रभाव मिलने सम्भव हैं। जैस कोयले को चिंगारी लाल कर देती है, उसी प्रकार अन्धेरे मन के कोने को देव ज्योति रोशन करती है, जिससे हमें हमारी नीच गतियों का एहसास होता है, इसके बिना यह एहसास वा जागृति असम्भव है। किसी आत्मा ने इस दुर्लभ सचाई को देव ज्योति को पाकर देखा है :-

जीवन में नीच गतियों की, भयानक रौ जो है जारी,
बहे जाते को उस रौ से, बचाओ तुम मेरे सत्गुरू।

हम दुर्लभ मनुष्य नीच गतियों की रौ में बहे जा रहे हैं। गुरु महाराज की शरण का महा सौभाग्य पाकर भी अपनी नीच गतियों से बेसुध होकर जी रहे हैं। हानि, दुख और विनाश के मार्ग पर पड़े हुए हैं और इससे ही खुश और सन्तुष्ट हैं, अबोधी हैं।

अपनी प्रकृत हालत को देखना, जानना, अनुभव करना, उससे दुखी होना और तड़पना और उस अवस्था से अधिक से अधिक उभरना, हर अपना सच्चा भला चाहने वाले मनुष्य का बेहद बड़ा सौभाग्य है।

अपनी उक्त प्रकृत अवस्था से अबोधी वा गाफिल रहना और अपने आप में मस्त रहना, बेहद बड़ा मन्द भाग और बदकिस्मती है।

(बलदेव सिंह)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

क्या हम कृतज्ञ हैं?

हमारे देश में धर्मों की भरमार है और परमात्मा को धर्म का मूल समझा जाता है। उसी को जन्मदाता, पालनकर्ता और सब सुख प्रदानकर्ता समझकर उसकी आराधना होती है। हम काल्पनिक दुनिया में जीते हैं। जिसको साक्षात किसी ने देखा नहीं, उसको सबसे बड़ा सम्बन्धी समझकर अपने साक्षात उपकार कर्ताओं के प्रति उदासीन रहते हैं। किसी धर्म स्थान में उन उपकारियों को याद नहीं करवाया जाता, जिनकी कृपा से यह हमारा वजूद है, हमें जन्म दिया है, जिन्होंने हमें पाला है, बड़ा किया है, जिन्होंने सर्दी गर्मी और दुनिया की तमाम मुसीबतों से हमें सुरक्षित रखा है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जो कृतज्ञता के सागर थे, उन्होंने इस सम्बन्ध को इतना महत्त्व दिया है कि साल का आरम्भ ही हमारे प्रारम्भिक सम्बन्धी अर्थात् माता पिता से किया है। पूजनीय भगवान के जन्मोत्सव के बाद आजकल माता पिता के सम्बन्ध में दिन आरम्भ हो चुके हैं। वैसे तो इतने महान उपकारियों को पूरा वर्ष ही स्मरण करने की आवश्यकता है, परन्तु यदि इन दिनों में उन्हें हम विशेष रूप से याद करें तो पूरा वर्ष भी हम कुछ न कुछ कृतज्ञता का प्रकाश करते रह सकते हैं।

हमें यह अनुभव करते रहना चाहिए कि हमारी हस्ती हमारे माता पिता की कृपा से है, उनकी सेवा वा त्याग का परिणाम है। हमारा शारीरिक, मानसिक और हार्दिक विकास उनकी कृपा से ही हुआ है। यदि हमें स्वस्थ्य, सुन्दर शरीर मिला है, तो क्या हम उसके लिए माता पिता के कृतज्ञ अनुभव करते हैं? यदि हमारी मानसिक शक्तियां अच्छी हैं और उन्हें उन्नत करने के लिए हमें स्कूलों कॉलिजों में भेजा गया है, हमारी फीसें भरने के लिए, आर्थिक तौर पर सुदृढ़ न होने पर, कोई प्रिंसीपलों के आगे गिड़गिड़ाया है, तो क्या उनके इस रूप के आगे कभी झुकते हैं? उनकी इन अनथक कोशिशों ने समाज में हमारा माननीय स्थान बना दिया, हमें आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिए उन्होंने अपने सुखों का त्याग किया, रातों जागे परन्तु हमारा भविष्य संवारा, क्या कभी इस रूप की ओर हमारा ध्यान जाता है?

हमारी बिमारियों में रात दिन जागे, पानी की तरह पैसा बहा दिया, डाक्टरों के आगे मिन्नतें की, परेशानी में से गुज़रे, तो ही हमें स्वस्थ जीवन मिला, क्या उनके इस निस्वार्थ रूप को सामने लाकर उनके आगे हम झुकते हैं?

जब हम जीवन में निराश हुए, असफल हुए तो सारी दुनिया की आलोचना का केन्द्र बने, परन्तु माता पिता का स्नेहमय हाथ हमारे सिर से नहीं हटा। उनके प्यार उत्साह न हमें उभरने के योग्य बनाया, हमारे दुख को हमसे भी अधिक अपना समझा, वह दुखमय समय बीत गया और उसके साथ ही वह ममता छलकाने वाले माता पिता के प्रति भी हम उदासीन हो गए, तो क्या हम कृतज्ञ कहला सकते हैं?

माता पिता के उपकारों, उनकी सेवाओं, उनके स्नेह, उनके त्यागों की कोई सीमा नहीं। वह हमारे सबसे पहले, सबसे प्यारे और सबसे बड़े उपकारी हैं। परन्तु अफसोस यह है कि बच्चों की कृतज्ञता विहीन अवस्था से माता पिता घर-घर

घायल हैं। यदि माता पिता बच्चों को उनके भले की बात भी करते हैं तो वह काटने को दौड़ते हैं। माता पिता आधुनिक सब सहूलतें बच्चों को देते हैं, परन्तु उन्हीं के द्वारा वह बर्बाद होने लगते हैं, यदि माता पिता कुछ समझाने का यत्न करें, तो सबसे बड़े शत्रु लगते हैं।

गांव में रहने वाले माता पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करें, उनको शहरों में भेजते हैं परन्तु वह यहां शहर की रंगरलियों में यह भूल जाते हैं कि किस प्रकार उसके माता पिता खेतों में अपना पसीना बहा रहे हैं, तब उसको पैसे देते हैं, और अपने दोस्तों मित्रों की संगत में पड़कर, शिक्षा को भूलकर अपना समय, अपना धन बर्बाद करने लगते हैं। माता पिता की सब उम्मीदों पर पानी फेर देते हैं।

जिन बच्चों को माता पिता ने ऐसे गुरु से जोड़ दिया, यह उनका सबसे बड़ा उपकार है। अपने सम्बन्धों में कैसे जीना है, यह सोझी पूजनीय भगवान के देव प्रभाव दायक मण्डल में ही मिलती है, जिससे सारी दुनिया वंचित है। बाहर की दुनिया के सब सुख साधन यदि माता पिता दे भी दें, परन्तु यदि सम्बन्धों में जीना न आए तो यह जिन्दगी नर्क बन जाती है, इसीलिए घर-घर में नर्क के नज़ारे दिख रहे हैं।

इस वातावरण ने हमें माता पिता का रूप दिखाया है, माता पिता चले गए, उनकी याद आती है, उनका रूप प्यारा लगता है, उनका इस वातावरण से जोड़ना सबसे बड़ा उपकार लगता है। उन्होंने शारीरिक, मानसिक और हार्दिक पूंजी को विकसित करने के अवसर प्रदान किए, उसी का परिणाम है कि कुछ न कुछ समाज में अपना हित करने और समाज में कुछ टूटी फूटी सेवा करने के योग्य हुए हैं। मैं तो यह अनुभव करती हूँ कि मेरे माता पिता विशेष थे। मेरे माता जी के भीतर हिम्मत और हौसला था, जो परिवार के लिए स्तम्भ की तरह थीं, पिता जी ने सदा दूसरों के लिए कुछ करने की प्रेरणा दी और अपनी शक्तियां भी उन्होंने अपनी योग्यतानुसार गुरु मिशन में लगाईं। गुरू के मिशन को फैलाने की उनके भीतर बड़ी गहरी तड़प थी। अपनी गल्तियों को मानने का और उसके लिए क्षमा मांगने का अद्भुत साहस था। ऐसे माता पिता जिन्होंने हमारी भलाई के लिए अपना तन, मन, धन सब झोंक दिया। बहुत कष्ट उठाए, परन्तु मुझे खुशी है कि उनकी सेवाएं निरर्थक नहीं गईं, बच्चों ने उन्हें बहुत सम्मान दिया, उनकी वह सेवा हुई, जो बड़ों-बड़ों की नहीं होती, अब भी दोनों की फोटोज़ सब घरों में सुशोभित हैं और उनके अपने घर में सब बड़े छोटे सुबह उन्हें प्रणाम करते हैं और रोज़ाना फूल चढ़ाते हैं और जब सब बहन भाई इकट्ठे होते हैं तो उनकी फोटोज़ के आगे उनके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं।

बेशक उनके पैमाने के अनुसार सब बच्चे नहीं चल सके, परन्तु परम पूजनीय भगवान के जितने-जितने प्रभाव उस घर में हैं, उन्हें माता पिता के प्रति जीना सिखा दिया है।

जब घर में ऐसा वातावरण बड़ों के द्वारा बनता है तो छोटे बच्चे भी उस रंग में ढलते जाते हैं। बड़ों का अपमान वा अपने माता पिता के प्रति उदण्डता नहीं आती और उसका सुख परिवार भोग रहा है।

हमारे बच्चों को भी पूजनीय भगवान की कृपा से बचपन में इस वातावरण में पलने का सौभग्य मिला, जिसका इतना गहरा प्रभाव है कि परिवार में स्वर्गीय दृष्ट देखने को मिलने हैं। हमारा

माता पिता के साथ सम्बन्ध देखकर, उनकी सेवा करते हुए देखकर और इस वातावरण में प्रतिपालित होकर, इस पक्ष में वह हमसे आगे निकल गए हैं। कई पक्षों में वह कमज़ोर होकर भी इस पक्ष में जो कृतज्ञता की भावनाएं ही नहीं, प्रैक्टीकल रूप से जो हमारी सेवा करते हैं और करना चाहते हैं, वह हम भी अपने माता पिता के लिए नहीं कर सके। इस सबके लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा के आगे जितना झुका जा सके, उतना कम है। कम से कम और नहीं तो दुनिया में हमें सुख से जीने के तो योग्य बना दिया। उनके उदाहरण से उनके बच्चे उनके लिए कृतज्ञता की भावनाएं रखते है। धन्यवाद के पत्र लिखना, उपहार देने और उदण्ड न होना, यह भावनाएं उनके भीतर भी आ रही हैं। यह एक लड़ी है, यदि तुम माता पिता की सेवाओं का उदाहरण पेश करते हो, तो आपके बच्चे अवश्य प्रभावित होंगे, परन्तु यह तभी सम्भव है यदि उन्हें ऐसी धर्म संगत के प्रभावों में बचपन से बिठाते रहें। इसमें हमारा बहुत बड़ा हित निहित है। परिवार नर्क का नमूना बनने से बच सकते हैं। इन दिनों में विचार करें कि क्या सचमुच हम माता पिता के लिए कृतज्ञ है? कृतज्ञता बहुत कम मिलती है, परन्तु यदि उपकारों को याद करते रहें, तो हानिकारक बनने से तो बच सकते हैं।

सुरजीत बराड़

ये है मां

मां का प्यार वह ऊर्जा है, जो असम्भव को सम्भव बना सकता है।

मां दुनिया में सबसे अधिक वेतन पाने वाली व्यक्ति है, क्योंकि उसे वेतन प्यार के रूप में मिलता है।

मां को ठंड लगती है, तो वह बच्चों को स्वेटर पहना देती है।

मां वह बैंक है, जहां हम अपने दुख और तकलीफें जमा करके भूल जाते हैं, और बदले में हमें ब्याज सहित खुशियां मिलती हैं।

सबकी मनपसंद मिठाई के चार टुकड़े हैं, घर में पांच सदस्य हैं और कोई तत्काल यह कहे कि उसे यह मिठाई बिल्कुल पसंद नहीं, तो यह कहने वाली मां ही हो सकती है।

(दैनिक भास्कर - मधुरिमा से साभार)

उत्पीड़न और संकट सफलता की सीढ़ी

जीवन में परिवर्तन का नियम जारी है। परिवर्तन में सुख, दुख का आना अवश्यभावी है परन्तु मनुष्य दुख नहीं चाहता, परन्तु फिर भी पग-पग पर इस को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। परन्तु यदि हम गहराई से सोचें तो यह चुनौतियां ही हमें बना सकती हैं या फिर मिटा सकती हैं।

कोई भी इन्सान ऐसा नहीं है, जिसके जीवन में समस्याएं न हों, परन्तु यह समस्याएं ही हमें कुछ सीखने, विकास करने, शक्तिशाली बनने वा अधिक ऊंचे लक्ष्य की ओर बढ़ने के अवसर प्रदान करती हैं।

हम जीवन में कितने सफल होंगे, वह इस बात से तय नहीं होता कि आप अच्छे दिनों का सामना कैसे करते हैं। सफलता तो इस बात से तय होती है कि आप बुरे दिनों का सामना कैसे करते हैं। बुरे दिनों का सामना करने के लिए यदि आप लगन, विश्वास के साथ किसी ऊंचे लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं, तो आपकी सफलता तय है। इसके लिए सच्चे साहस की आवश्यकता होती है। इसमें कठोर वा महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं। इसमें दृढ़ निश्चय वा मेहनत की आवश्यकता होती है। चुनौतियों का सामना करने का जज़बा होता है। फिर पहाड़ों को चीरकर मार्ग बनाया जा सकता है। हवाओं के रूख बदले जा सकते हैं, पानी का बहाव रोका जा सकता है।

इतिहास की ओर निगाह से जाएं, तो हम अनुभव करेंगे कि दुनिया में विकास उनके द्वारा नहीं हुआ, जिन्होंने घरों में आराम से जिन्दगी बसर की है या जिन्होंने जीवन में लक्ष्य नीचे की ओर साधा है, परन्तु वही इन्सान उन्नति के शिखर पर पहुंचे हैं, जिन्होंने दुखों, मुसीबतों, विरोधताओं, आघातों वा यन्त्रणाओं के मिलने पर भी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का साहस दिखाया है।

साधारणत: मनुष्य सफलता के लिए Short Cut का सुखदाई रास्ता ही अपनाता है, जिससे कभी, कुछ देर के लिए सफलता दिखाई देती है। परन्तु वह कोई विशेष वा असाधारण सफलता नहीं होती। वास्तव में उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति उन्नति वही करते हैं जो लम्बा मार्ग चुनते हैं और उसमें आने वाली अनन्त कठिनाईयों और बाधाओं का सामना करते हैं। और उन्हें पार करते जाते हैं। जब ऐसे इन्सान आगे बढ़ते हैं, तो कठिनाईयों से भागने वाले जन उनकी ओर देखते ही रह जाते हैं।

एक सच्ची घटना मैंने पढ़ी थी कि एक फौजी सिपाही युद्ध में अपनी दोनों टांगे गंवा बैठा। 10 वर्ष तक वह अपने अपाहिज होने पर आंसु बहाता रहा, लेकिन एक दिन उसने यह अनुभव किया कि दुनिया में कितने अपहिज हैं, जो जिन्दगी जी रहे हैं, कई कई सफल ज़िन्दगी जी रहे हैं। उसका नज़रिया बदला, वह कुछ Technical दिमाग रखता था। उसने कई अपने जैसे अपाहिजों को इकट्ठा किया, और एक गराज में सबको काम करने के लिए उत्साहित किया। काम चल निकला। उसके बाद बाहर से भी उसको इतनी मदद मिली, कि वह न केवल अपनी रोटी-रोज़ी कमाने के योग्य हुआ, बल्कि 100 के लगभग और जनों को भी भागीदार बना लिया।

जिन हालातों को हम बदल नहीं सकते, उन चुनौतियों को स्वीकार करके संघर्ष करने से जो सफलता मिलती है, उसकी खुशी ऐसे संघर्षशील जन ही अनुभव कर सकते हैं।

साधारणत: मनुष्य प्रकृति ऐसी है कि थोड़े से घाटे वा समस्या के आने पर निराशावादी हो जाते हैं और सुखदाई मार्ग की ओर लुड़क जाते हैं। केवल यही नहीं वह उन लोगों के प्रति ईर्षालु भी हो जाते हैं, जो कठिनाईयों में से गुज़रकर उनसे सफल हो जाते हैं। ऐसे ईर्षा में जलकर निंदक बनकर रोते-धोते जिन्दगी गुज़ार देते हैं।

जीवन एक अधूरे चित्र की तरह होता है, हम अपने पुरूषार्थ से भरते हैं। हम इस अधूरे चित्र वो सीमित योग्यताओं के कारण पूरा नहीं कर पाते। फिर भी कुछ ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति अवश्य हैं जो बाधाओं के रहते हुए अपने अधूरे चित्र को अधिक सुन्दर रूप से पूरा कर लेते है। यह संयोगवश नहीं होता, नियति उनके प्रति और भी क्रूर रहती है। इन क्रूरताओं के होते हुए भी कई महान व्यक्ति ऐसे हैं कि जिन्होंने उग्र रूप से संघर्ष किया और नियति को चुनौती दी। सभी महान व्यक्तियों को संघर्ष और विरोध की ज्वाला में झुलसना पड़ा है, उनकी यह अग्नि परीक्षा प्राय: अज्ञात रही है। परन्तु संघर्षों के बावजूद उनके भीतर एक जोत जगती रही। एक निष्ठा के कारण ही वे अपना जीवन किसी उच्च ध्येय की पूर्ति के लिए समर्पित कर सके।

शैक्सपीयर के इस कथन को याद रखिए, "यह जीवन यात्रा कर्मवीरों के लिए है, कायरों के लिए नहीं।" वीरतापूर्ण और संघर्षमय जीवन ही अधिक पूर्ण होता है। कवि होते हुए भी रविन्द्रनाथ टैगोर को संघर्षमय जीवन पसन्द था। उन्होंने लिखा है "अपनी सहानुभूति और प्रेम का दान देकर मेरी आत्मा को दुर्बल और परावलंबी मत बनाओ कठोर इन्कार और बेरहम आज़ादी में मुझे अकेला छोड़ दो। जीवन में भयंकरतम निराशा के तुफानों को सहर्ष झेलते हुए वीरतापूर्वक अपने उद्देश्य की प्राप्ति ही मुझे अधिक पसंद है।

जवाहरलाल नेहरू भी साहसी और संघर्षमय जीवन की सराहना प्राय: किया करते थे। उनके इन शब्दों में बड़ी विश्वास की झलक है "इस विराट विश्व में सब कुछ ही तो अधूरा पड़ा है। साहसियों के लिए मंजिल की कमी कब रही है। मैं निराशा में यकीन नहीं करता। मुझे उम्मीद है, हालात बदलेंगे। इन्सान की शक्ति में मेरी आस्था अडिग है। क्योंकि उसके दुबले पतले शरीर में दिमाग नाम की एक बेमिसाल चीज़ है, जो कोई बन्धन स्वीकार नहीं करती, कभी हार नहीं मानती।

कोई ऐसा महान व्यक्ति नहीं, जिसको अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष न करना पड़ा हो। जितना लक्ष्य ऊंचा होता है, उतनी ही दुनिया की ओर से विरोधता अधिक होती है और जो उसे सहकर बढ़ते जाते हैं, वही सफल होते हैं।

अगर परम पूजनीय भगवान देवात्मा असह्य कठिनाईयों और तपों में से न गुजरते, तो न अद्वितीय देव जीवन व्रत ग्रहण होता, न देव समाज स्थापन होती और न सरकारी नौकरी का त्याग होता, न हम लोग बच सकते। कोई भी उच्च लक्ष्य कुर्बानी चाहता है, परन्तु सत्य और शुभ का राज्य लाने का लक्ष्य तो मनुष्य प्रकृति के बिल्कुल ही विरूद्ध था, उसको सिद्ध करने के लिए देवात्मा ने अनोखी तपस्या की, परन्तु आखिर अपने विरोधियों पर फतह हासिल की और देव धर्म की वह निराली शिक्षा खोजी जो कोई ईश्वर देवी देवता न कर सका और न कर सकता था। यदि पूजनीय भगवान

को यह दुख मुसीबतें न आतीं। यदि अपनी नीच प्रकृति से मनुष्यों ने उन्हें न सताया होता, तो अपनी देव प्रकृति से मनुष्य प्रकृति को समझना ही कठिन था। अद्वितीय त्याग में उन्होंने फरमाया है कि नीच भावों के कारण मनुष्यों के द्वारा वह प्रताड़ित हुए, यही मानव प्रकृति का अध्ययन था।

जहां प्रतिभा होती है वहां मनुष्य सब बाधाओं को पार कर जाते हैं। प्रत्येक कठिनाई को वह चुनौती के रूप मैं लेते हैं। उनकी यह अग्नि परीक्षा होती है। सोना तप कर ही निखरता है। कोयला सूर्य के ताप को सहकर ही हीरा बनता है।

यदि श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी सारी आयु रेगिस्तान की भूमि में बिस्तर उठाकर पैदल न चलते, रुखा सूखा न खाते, नीच लोगों से अपमान न सहते तो क्या वह शराबियों, शिकारियों, कन्या हत्याओं, चोरों, डाकुओं, कृतघ्नों को बदलकर नेक इन्सान बनाकर उस रेगिस्तान को गुलज़ार बना सकते थे? मानवता का दर्द उन्होंने अपने ऊपर लिया और उनके घर आबाद कर दिए, उस वीरान इलाके में, उस उजड्ड इलाके में एक नई परिवर्तन की लहर पैदा कर दी और अपनी तपस्या के द्वारा छोटी उमर में ही बीसियों देव धर्म के प्रचारक पैदा कर दिए।

श्री पी. वी. कनल जी की जीविन कथा पढ़ते हुए मैंने अनुभव किया है कि वह देवात्मा के मिशन के अनथक सिपाही थे। साहित्य में, ऐजूकेशन के क्षेत्र में जो उन्होंने काम किया है, वह एक उदाहरण है। उनकी बेहद आलोचना होती थी। उनकी झूठी निन्दा होती थी। उनकी झूठी शिकायतें पूजनीय भगवान देवात्मा के पास पहुंचती थीं, जैसे कि मैंने पहले लिखा है, अयोग्य जन ईषालु होकर काम करने वालों को सह नहीं सकते, उनका यह मिशन होता है कि यदि योग्य जन निकल जाएं, तो उनकी तूती बोल सकती है, परन्तु जिन्हें देवात्मा के मिशन का जनून होता है, सब कठिनाईयां सहकर भी उनके मिशन का काम नहीं छोड़ सकते। कनल जी के भीतर तो पूजनीय भगवान के लिए अथाह श्रद्धा थी, उन्होंने सब विरोधताओं को चीरते हुए, दुगने उत्साह से गुरु मिशन का वह काम किया, वह आम आदमी के वश में नहीं था। पूजनीय भगवान की इच्छा प्रगट करने पर अंग्रेजी भाषा में उनकी सुन्दर प्राय: हजार पृष्ठों की जीवनी लिखी, जिससे अपने गुरु की खुशी को प्राप्त करके धन्य-धन्य हो गए। जितना भी साहित्य अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है, वह सब लगभग उनकी वा उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री काका जी की देन है। उनकी जीवनी पढ़कर मैंने तो सदा ही नया उत्साह वा प्रेरणा पाई है।

मैंने स्वयं भी यह अनुभव किया है कि जब-जब कठिनाईयां आई हैं, और उनसे हार मानने के स्थान पर डटकर सामना किया है तो नया आत्म विश्वास जगा है।

थियोडोर रूजवैल्ट लिखते हैं :-

"महान व्यक्ति वह होता है, जिसकी निष्ठा प्रबल होती है, जिसका उद्देश्य महान होता है, जो सर्वश्रेष्ठ अन्दाज में अन्त में महान उपलब्धि की विजय प्राप्त करता है और सबसे बुरी स्थिति में अगर वह असफल हो जाता है, तो भी वह जानता है कि महान जोखिम लेने के बाद असफल हुआ है और इसलिए उसकी जगह उन बेजान और कायर लोगों के साथ कभी नहीं होगी, जो न तो विजय को भी जानते है और न पराजय को।

सुरजीत बराड़

ज्योतिष विद्या झूठ का पुलिंदा

सदियों से भारतीयों के दिमाग पर हावी ज्योतिष विद्या सच है या नहीं, इस विषय पर अभी तक किसी तरह का शोध या परीक्षण नहीं हुआ है। पश्चिमी देशों में जरूर वैज्ञानिकों, अनुसंधानकर्ताओं व विद्वानों ने कई रिसर्च व परीक्षण किए, जिन में ज्योतिष विद्या सचाई की कसौटी पर खरी साबित नहीं हो पाई। इसे झूठा अंधविश्वास पाया गया।

भारत में आज भी हर कोई भविष्यवाणियों में आंखे मूंद कर विश्वास करता है भले ही ज्योतिषियों की कही बातें गलत सिद्ध हुई हों, लोगों का विश्वास है कि ज्योतिष विद्या हमारे वेदों व दूसरे धार्मिक ग्रंथों में बताई गई है इसलिए यह झूठ कैसे हो सकती है। लिहाजा, प्रिंट और अत्याधुनिक इलेक्ट्रोनिक मीडिया से लेकर हर गलीनुक्कड़ पर भविष्य बांचने वालों का जाल बिछा हुआ है। लोग अपने दिन की शुरूआत इन के बताए अनुसार ही करते हैं, फिर चाहे वह गलत की क्यों न हो।

ऐसे में जम्मू के राकेश आनंद ने एस्ट्रोलोजी (ज्योतिष विद्या) पर अपनी रिसर्च आधारित एक पुस्तक में दावा है कि एस्ट्रोलोजी झूठ है। उन्होंने अपने शोध व परीक्षण में पाया है कि ज्योतिष गणनाएं सत्य की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। ज्योतिष संभावनाओं और विरोधाभासों से भरी हुई है।

एस्ट्रोलोजी को अंधविश्वास करार देते हुए राकेश कुमार अब इस के प्रति लोगों को जागरूक करने का बीड़ा उठा चुके हैं।

अपनी रिसर्च में राकेश न कुछ मशहूर विदेशी विद्वानों के शोध व परीक्षणों का ज़िक्र किया है। इन में प्रमुख तौर पर रूडोल्फ एच. स्मिथ, ज्योफ्रे डीन आदि हैं। रुडोल्फ एच. स्मिथ के कई परीक्षणों के उदाहरण इन की शोध पुस्तक में दिए गए हैं।

दरअसल, ज्योतिष विद्या में सितारों, ग्रहों व नक्षत्रों की स्थिति देख कर लोगों का भूत, भविष्य बताया जाता है। ज्योतिषी सब से पहले व्यक्ति की जन्मतिथि, जन्म समय व स्थान के वक्त सितारों की स्थिति देखकर फलित गणना के आधार पर उस के जीवन के बारे में बताते हैं। ज्योतिषी प्रमुख तौर पर विवाह, नौकरी, व्यवसाय, संतान, धन संपत्ति, माता पिता, पत्नी से संबंध, मानसम्मान आदि के बारे में जानकारी देते हैं। यह सब ग्रहों के अच्छे बुरे असर के आधार पर बताया जाता है।

लेकिन राकेश आनंद ने अपनी पुस्तक में ग्रहों, नक्षत्रों की वैज्ञानिक खोजों के आधार पर जानकारी देते हुए इन्हें महज गैस और तरल पदार्थों से युक्त बताया है और सवाल उठाए हैं कि ये "स्टार देवता" ऐसे में कैसे किसी व्यक्ति के भाग्य को प्रभावित कर सकते हैं।

रिसर्च से पहले भारतीय परंपरागत धर्मभीरु परिवार के युवक की तरह राकेश कुमार भी शुरू में ज्योतिष में विश्वास रखते थे। जन्मपत्री दिखा कर भविष्यवक्ताओं के यहां खूब घूमे। इस विद्या को सीखा, पढ़ा भी और व्यवसाय के तौर पर अपनाने का भी विचार किया पर वह खुद ही इस की सत्यता पर उठे संदेह को दूर नहीं कर पाए।

हर भविष्यवक्ता अलग अलग बात कहता दिखाई पड़ा। शुरू में उन्होंने जम्मू, दिल्ली, जोधपुर, मथुरा आदि शहरों के ज्योतिषियों को अपनी जन्मपत्री

दिखाई तो किसी ने उन्हें डाक्टर बनने का सपना दिखाया, किसी ने पारिवारिक बिजनेस का योग बताया, किसी ने फिल्म लाइन का, किसी ने देश में छोटीमोटी नौकरी का तो किसी ने विदेश में जाने का योग बताया। जन्मपत्री एक, फिर भी ज्योतिषियों के सुर अलग-अलग क्यों? इस सवाल का जवाब उन्हें नहीं मिल पाया।

इसी दौरान उन्हें बताया गया कि कुछ 'अलौकिक सिद्धि' प्राप्त ज्योतिषी सटीक भविष्यवाणी करते हैं जबकि दूसरे वैसी नहीं कर पाते। ऐसे तथा कथित ज्योतिषी भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाए।

इस शोधकर्ता ने लिखा है कि इस ने युवावस्था में परमहंस योगानन्द लिखित 'योगी कथामृत' व अंगरेजी में 'आटोबायोग्राफी आफ ए योगी' पढ़ी थी। इस पुस्तक के एक अध्याय में योगानंद के गुरु श्री युक्तेश्वर ने एस्ट्रोलोजी की पैरवी की थी और योगानंद ने भी अंततः ज्योतिष को स्वीकार किया था। योगानंद से वह प्रभावित थे इसलिए ज्योतिष पर उनका भी विश्वास पक्का हो गया।

उन्हें यकीन था कि ज्योतिषियों के निर्देशों का पालन करने से जन्मपत्री में जो अनिष्टकारी दोष हैं उन का शमन हो जाएगा और सफलता मिल जाएगी।

अमेरिका में स्क्रीनराइटिंग की पढ़ाई करने के अपने 3 वर्ष प्रवास के दौरान उन्होंने वहां भी कई ज्योतिषियों, हस्त विद्या, अंक विद्या, टैरा कार्ड आदि के विशेषज्ञों से अपने भूत, वर्तमान एवं भविष्य के बारे में जानना चाहा। लेकिन वहां भी सब की अलग-अलग भविष्यवाणी थी।

पर ज्यादातर भविष्यवाणियां हकीकत में झूठी ही रहीं। भारत वापस आने पर उन्होंने अपनी रुचि के लिए इस विद्या को सीखना तय किया। एक प्रोफेशनल एस्ट्रोलोजर से जन्मपत्री बनाना सीखा। ज्योतिष पर कई पुस्तकें भी पढ़ी और खुद की जन्मपत्री का विश्लेषण शुरू किया। अनेक पुस्तकों में दिए हुए गुणसूत्रों के अनुसार मिलान किया जो उन की जन्मपत्री में फिट बैठते हों, अंकों की गणनाओं को मिलाने की कोशिश की पर गणना समझने में असफल रहे कि प्लानेट और स्टार देवता वास्तव में मनुष्य के भाग्य को कैसे प्रभावित करते हैं।

अपनी ही जन्मपत्री को पढ़ने में ज्योतिष के एक फार्मूले के अनुसार जीवन बहुत अच्छा दिखता तो दूसरे के मुताबिक बहुत खराब। इस के अलावा अनगिनत संभावनाएं विभिन्न फार्मूलों में दिखाई देती थी। इस से वह असमंजस में पड़ जाते। अपने एस्ट्रोलोजर टीचर से पूछने पर वह इन विरोधाभासी परिणामों के अनेक कारक बताते थे लेकिन टीचर के स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं हो पाते थे।

इस से राकेश कुमार के दिमाग में आया कि ज्योतिष में इतनी संभावनाएं क्यों हैं और चीज़ों का मिलान क्यों नहीं होता। क्या यहां एस्ट्रोलोजरों के साथ कुछ गलत है या एस्ट्रोलोजी खुद में ही गलत है।

वह लिखते हैं कि इन संदेहों के साथ उन्होंने अपने व्यापार एवं निर्माता, अभिनेता के तौर पर तमाम अनुबंध निरस्त, स्थगित कर एस्ट्रोलोजी की मान्यता पर रिसर्च करने का निर्णय किया।

रिसर्च के लिए जब राकेश कुमार ने इस से संबंधित पुस्तकों की तलाश शुरू की तो ताज्जुब हुआ कि एक भी पुस्तक उन्हें एंटी एस्ट्रोलोजी की नहीं मिल पाई। इस के विपरीत ज्योतिष सीखने

वाली सैकड़ों पुस्तकें जरूर दिखाई दीं।

कई सप्ताह तक इंटरनेट खंगालने के बाद पता चला कि एस्ट्रोलोजी झूठ है। कई पश्चिमी वैज्ञानिकों और बुद्धिजीवियों ने अपने विस्तृत शोधों और परीक्षणों से इसे झूठा पाया। लिहाज़ा उन्हें भी रिसर्च और परीक्षण का सूत्र हाथ लग गया।

परीक्षण के तहत कई भारतीय व विदेशी विख्यात और कुख्यात हस्तियों की जन्म संबंधी सूचनाएं इंटरनेट व ज्योतिष पत्रिकाओं से जमा की गईं। इन में से 24 हस्तियों को चुना गया। उन की जन्मपत्रियां बनाई गईं। इन के अलावा अपने जानने वालों की 9 जन्मपत्री भी ली गईं। कुल 33 जन्मपत्रियों को लेकर ज्योतिष की परख शुरू हुई। शुरूआत जम्मू के ज्योतिषी से हुई और जालंधर, लुधियाना, कुरुक्षेत्र, दिल्ली, मथुरा, गोकुल और ऋषिकेश के ज्योतिषियों को ये जन्मपत्रियां नाम बदलकर दिखाई गईं। इन में सभी तरह के ज्योतिषी शामिल थे। कुछ वंशानुगत तौर पर इस पेशे में थे, जो पिछले 50 सालों से यही जन्मपत्री देखने का काम कर रहे थे। कुछ अलौकिक शक्तियां प्राप्त होने का दावा करने वाले थे, तो कुछ इस विद्या में डिगरी, डिप्लोमा धारक थे। इन में कुछ की फीस 1 हजार रुपए से कम न थी, तो कुछ जो भी मरजी से दे देंगे, उसी को स्वीकार कर लेने वाले भी थे।

इन 33 जन्मपत्रियों को 101 जगहों पर पढ़वाया गया पर कोई भी एस्ट्रोलोजर भूत, भविष्य वर्तमान के बारे में सही-सही नहीं बता पाया।

अमिताभ बच्चन :– 11 अक्टूबर, 1942 को जन्मे अमिताभ बच्चन की जन्मपत्री नाम बदल कर रजत मल्होत्रा के नाम से दिखाई गई तो जम्मू के ज्योतिषी ने बताया, 3 से 4 बच्चे होंगे, पत्नी से विवाद रहेगा, माता पिता का असहयोग, ड्रिंक और औरतों की बुरी लत रहेगी, बच्चों से असंतुष्ट, सर्विस क्लास, 50 साल की उम्र तक सामान्य जीवन व्यतीत होगा।

जम्मू के ही एक दूसरे ज्योतिषी ने बताया, जातक अभिनय क्षेत्र में सफल नहीं होगा, केवल समय और धन बरबाद होगा, फिल्म वितरण क्षेत्र में जरूर कामयाबी मिल सकती है। 2 शादियां संभव हैं। कुल मिला कर जीवन में सफलता नहीं मिल पाएगी।

मथुरा के ज्योतिषी बताते हैं कि संतान गृह के स्वामी 8वें स्थान पर होने से संतान पक्ष में चिंताएं रहेंगी। 2006-07 में केतु के कारण आर्थिक समस्याएं, पत्नी के स्वास्थ्य की चिंताएं और कई उतारचढ़ाव आएंगे।

कुरूक्षेत्र के एस्ट्रोलोजर कहते हैं, पत्नी और बच्चों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे, केतु मानसिक परेशानियां देता रहेगा ग्रोसरी स्टोर, कन्फेक्शनरी स्टोर या एजेंसी से संबंधित व्यापार में सफलता मिलेगी।

सभी जानते हैं कि भारतीय सिनेमा में अमिताभ बच्चन की उपलब्धियां बेमिसाल हैं। देशविदेश में उन की ख्याति है और खूब पैसा है पर ज्योतिषी उन की जन्मपत्री देख कर कुछ और ही कह रहे हैं।

ब्रिटनी स्पीयर्स :– मशहूर अमेरिकी पौप सिंगर, डांसर, अभिनेत्री और लेखिका ब्रिटनी स्पीयर्स ने अपने क्षेत्र में सफलता के झंडे गाड़ रखे हैं। अमेरिकन म्यूज़िक इतिहास में वह 8वीं सब से अधिक बिकने वाली कलाकार हैं। जनवरी 2004 में उस ने अपने बचपन के दोस्त जैसन ऐलन एलेक्जेंडर से शादी कर ली, पर यह शादी ज्यादा नहीं चली। इसी साल उस ने एक दूसरे कलाकार केविन फेडरलिन से ब्याह रचाया। फेडरलिन से उसे

2 बेटे सीन प्रेस्टन और जेडन जैम्स हुए। नवम्बर 2006 में फेडरलिन से उस का तलाक हो गया।

लेकिन ज्योतिषी इस कलाकार के बारे में कुछ और ही बता रहे हैं। 2 दिसम्बर 1981 को जन्मी स्पीयर्स की जन्मपत्री सियारा लोहान के नाम से दिखाई गई तो सब से पहले जम्मू का ज्योतिषी बताता है, प्रोफेशन सर्विस होगा, 2 शदियां होंगी, दूसरी शादी सफल रहेगी। पहली शादी 2008 से 2013 के बीच होगी। दूसरी शादी 2013 के बाद होगी।

दिल्ली का ज्योतिषी कहता है, उच्च मध्यम श्रेणी की लाइफ स्टाइल होगी। एक बच्चा होगा, फैशन डिजायनिंग, आर्टिफिशिय ज्वेलरी, आर्ट, पेंटिग, विज्ञापन, मीडिया कार व्यवसाय होगा।

लुधियाना के ज्योतिषी बताते हैं, वीनस ठीक नहीं है इसलिए म्यूज़िक में सफलता नहीं मिलेगी, दिसंबर 2006 से 18 दिन के भीतर एक बहुत धनवान व्यक्ति से शादी होगी।

बेनज़ीर भुट्टो :- इसी तरह 21 जून, 1953 को करांची में जन्मी बेनजीर भुट्टो की जन्मपत्री जरीना बानो के नाम से दिखाई तो जम्मू के ज्योतिषी ने बताया, बृहस्पति के अच्छे व्यवसाय में खूब कामयाबी मिलेगी। खराब मंगल के कारण 2 शादियों में तलाक होगा। तीसरी शादी सफल होगी। वीनस और मंगल के प्रभाव से नए तकनीकी व्यापार में सफलता मिलेगी। कोई भी सितारा राजनीति में सफलता की ओर इशारा नहीं कर रहा है।

दिल्ली का ज्योतिषी कहता है, वैवाहिक जीवन अस्तव्यस्त रहेगा, 31 अक्तूबर, 2006 से 10 सितंबर, 2009 तक आर्थिक दिक्कतें रहेंगी। रेडीमेड गारमेंट, फैशन डिजायनिंग, ट्रेडिंग या मैन्युफैक्चरिंग जैसा व्यवसाय होगा। एक से ज्यादा शादियां होंगी।

ताज्जुब ताज्जुब है कि किसी भी भविष्य वक्ता ने बेनज़ीर की मृत्यु के बारे में नहीं बताया।

(बाकी फिर)

(सरिता से साभार)

कितने-कितने कर्ज़

मम्मी, क्या आप सुन रही हैं?

मम्मी, मुझे आपका बहुत सारा उधार चुकाना है-बहुत सारी सेवाओं की कीमत अदा करनी है। उदाहरण के लिए, रात को आप पहरेदार का काम करती थी। मेरे खांसने और रोने की आवाज सुनकर आप जाग जाती थीं और जब मैं रात को देर से घर लौटता था, तो आप चरमराते फर्श की आवाज़ सुनने का इंतजार करती रहती थी। आपकी आंखें बाज़ की तरह तेज थीं और आप शेरनी की तरह दहाड़ती थीं, लेकिन आपका दिल बहुत विशाल था। मुझे आपकी कुक, शेफ और बेकर की सेवाओं का उधार चुकाना है-स्वादिष्ट खाना बनाने और दो लड़कों को बड़ा करने की सेवाओं का भी। मुझे आपकी सफाई की सेवाओं का उधार चुकाना है। आप हर दिन मेरे चेहरे और कानों को साफ करती थीं-सारा काम हाथ से होता था-और छोटे से लड़के के पैंट से से बार-बार धूल झाड़ती थीं, ताकि वह हमेशा बेदाग जिंदगी जिए। और बचपन से आंसू पोंछना तथा बढ़ते बच्चे की समस्याओं को मिटाना, जो कोई लॉन्ड्री कभी नहीं कर कर सकती।

मुझे बॉडीगार्ड के रूप में आपकी सेवाओं का उधार चुकाना है - तूफानों और बुरे सपनों और युवावस्था की ढेर सारी डरावनी चीजों के आतंक से मुझे बचाने के लिए।

और ईश्वर जानता है कि बीमारी में मेरा ध्यान रखने के लिए मुझे आपका कितना उधार चुकाना है - आपने खसरे, गलसुए, चोटों, नील के निशानों, कटने - फटने और बुखार में मेरी देखभाल की थी। और हमें डॉक्टरी सलाह को नहीं भूलना है - ओह नहीं - आपने मुझे बहुत सी महत्त्वपूर्ण बातें बताईं घाव खुजाओगे तो यह ठीक नहीं होगा। अगर अपनी आंखें भेंगी करोगी तो ये वैसी ही रह जाएंगी। शायद सबसे महत्त्वपूर्ण सलाह यह थी कि अंडरवियर हमेशा साफ रहना चाहिए, क्योंकि हो सकता है एक्सीडेंट हो जाए। मुझे आपका यह उधार भी चुकाना है कि मैं जिस भी आवारा कुत्ते को घर ले आता था, आप उसे खिलाती - पिलाती थीं। अपनी किशोरावस्था के प्रेम के घाव भरने के लिए भी मुझे आपका उधार चुकाना है। मुझे मनोरंजन के लिए भी आपका उधार चुकाना है - जिसकी वजह से घर बहुत मुश्किल दौर से गुज़र पाया - क्रिसमस, चार जुलाई और जन्मदिन के समारोह - और आपने बहुत ही कम खर्च में ये समारोह मनाए।

मुझे निर्माण कार्य के लिए भी आपका उधार चुकाना है - पतंगें, आत्मविश्वास, आशाएं और सपने बनाने के लिए। किसी तरह आपने उन सभी को आसमान तक पहुंचा दिया। और परिवार को इकट्ठा रखने के लिए भी मुझे आपका उधार चुकाना है, जिससे यह बुरे से बुरे थपेड़ों और झटकों के बावजूद खड़ा रह पाया आपने एक ऐसी ठोस नींव रखी, जिस पर मेरी जिंदगी का महल खड़ा हो सके।

मुझे लाने - ले - जाने के लिए भी आपका उधार चुकाना है - जीवन की उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, जो एक बढ़ते हुए बच्चे को पूरी करनी ही थीं - जैसे ऊंचे जूते, जिनमें बगल में जैकनाइफ रखने के लिए छोटी जेब हो। और मम्मी, मैं एक चीज़ कभी नहीं भूल पाऊंगा - जब एप्पल पाई के सिर्फ दो टुकड़े बचते थे और तीन लोग भूखे होते थे, तो आप ही होती थीं, जो अचानक यह फैसला करती थीं कि आपको एप्पल पाई नहीं चाहिए। मैंने सिर्फ़ चंद चीजें गिनाई हैं। इनके अलावा और भी बहुत सी चीजें हैं, जिनके लिए मुझे उधार चुकाना है। जिस व्यक्ति को मुझे यह उधार चुकाना है, उसने बहुत सस्ते में काम किया। उसने अपनी जरूरतों का त्याग करके यह सब किया।

मेरे आईओयू इतने ज्यादा हैं कि मैं कभी उनका भुगतान नहीं कर सकता, लेकिन इसके बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि मैं जानता हूँ कि वे सारे बिलों पर लिख देंगी, 'पूरा अदा किया।' शर्त सिर्फ इतनी है कि उन्हें एक बार चूमना होगा और ये छह शब्द कहने होंगे।

मम्मी, मैं आपसे प्यार करता हूँ।

(आहा! जिन्दगी से साभार)

ईसाई जगत में मदर्स डे

यह कहानी एक बेटी के संकल्प की कहानी है। अपनी मां को श्रद्धांजलि देने का उसने वह तरीका चुना कि सम्पूर्ण विश्व उसके पदचिन्हों पर चल रहा है। मदर्स-डे की प्रणेता ऐना जारविस ने अपना पूरा जीवन मदर्स-डे को मान्यता दिलाने के लिए समर्पित कर दिया और आज वे 'मदर्स-डे' के नाम से जानी जाती है।

ऐना जारविस का जन्म 1 मई 1864 को पश्चिमी वर्जिनिया में हुआ। ग्यारह भाई-बहनों के बड़े परिवार में उनका क्रम नवां था। मदर्स-डे का विचार ऐना के मन में किस तरह अंकुरित हुआ, इसके पीछे एक रोचक घटना है। ऐना तब महज 12 साल की थी। ऐना की मां ने अपनी बेटी की उपस्थिति में एक पाठ, 'मदर्स ऑफ बाइबल' पढ़ा। पाठ के पूरा होने पर उन्होंने एक कविता से इसका समापन किया। कविता का भावार्थ कुछ इस तरह था-

मैं उम्मीद करती हूं कि कोई, कभी ऐसे मदर्स-डे की खोज कर सके जो मां की मानवता के हर क्षेत्र में अद्वितीय सेवाओं के लिए उसका आभार मान सके। वह इसकी हकदार है।'

नन्ही-सी ऐना के मन पर ये शब्द गहरे अंकित हो गए और वह इन्हें ताउम्र नहीं भुला सकी। 1905 में ऐना की मां का निधन हो गया। उन्हें दफनाते वक्त भी ऐना के मन में उसी कविता के शब्द गूंज रहे थे और वह बुदबुदाई, भगवान ने चाहा तो मदर्स-डे का वह दिन जरूर आएगा। ऐना के भाई क्लॉड ने यह शब्द सुने।

ऐना ने निश्चय किया कि वह मां का सपना पूरा करके ही रहेगी और इसके बाद शुरू हुआ असली संघर्ष। अमेरिकी बच्चों के द्वारा अपने माता पिता के प्रति अवहेलना भरे व्यवहार ने उनके संकल्प को और मजबूत किया कि कोई ऐसा दिन तय करें, जो बच्चों को उनके मां के त्याग और कष्टों का स्मरण कराए। 1907 में ऐना ने मां की दूसरी बरसी पर फिलाडेल्फिया के चर्च से राष्ट्रीय स्तर पर मदर्स-डे पर अभियान आरम्भ किया। इसके बाद उन्होंने और उनके समर्थकों ने इस सम्बन्ध में शासन को हजारों पत्र लिखे। 1909 तक करीब 45 राज्य इस अभियान से जुड़ चुके थे। वे कार्नेशन फूलों के जरिए अपनी भावनाएं व्यक्त करते थे। ये फूल ऐना की मां को बहुत प्रिय थे। 1911 में मदर्स-डे अमेरिका के लगभग हर कोने में मनाया गया और अंततः 1914 में राष्ट्रपति विल्सन ने एक आधिकारिक घोषणा करते हुए मई के दूसरे इतवार को मदर्स-डे की मान्यता दी और इसे राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया।

इस तरह ऐना का संघर्ष पूरा हुआ। उनका उद्देश्य हर मां को सम्मान दिलाना था, जो असहनीय पीड़ा झेलकर बच्चे को जीवन और जन्म देती है। मां के बच्चे के प्रति प्यार और समर्पण का कोई मुकाबला नहीं हो सकता।

माता पिता संतान दिवस

11 जनवरी 2009 की खिली हुई दोपहर में टैगोर थियेटर में चण्डीगढ़ कोचिंग सेंटर के विद्यार्थियों और स्टाफ ने मिलकर एक अनूठा समारोह आयोजित किया - माता पिता संतान दिवस। इस समारोह की अक्ष्यक्षता पंजाब युनिवर्सिटी के वी. सी. श्री आर. सी. सोबती साहिब ने की।

कार्यक्रम की शुरूआत एक हृदयस्पर्शीय गीत से हुई जिसका मकसद माता पिता के प्रति कृतज्ञता की भावना जगाना था। गीत के बोल थे - "कैसे माता और पिता के उपकार सुनाऊँ मैं।"

मुख्य अतिथि श्री आर. सी. सोबती का मानना था कि - "माँ - बाप का कर्ज़ एक ऐसा कर्ज़ है, जिसे व्यक्ति कभी नहीं अदा कर सकता। व्यक्ति का असली व्यक्तित्व उसकी माता पिता के प्रति भक्ति और उनके ऋण की अदायगी से माना जाता है। एक विद्यार्थी की सफलता से उसके अध्यापक या माता पिता से अधिक किसी को प्रसन्नता नहीं होती। हमें अपने देश की परम्पराओं को बचाना है....।"

इस उपलक्ष्य पर डॉ. खेड़ा ने श्री सोबती को एक लाख रूपये का चैक Vice Chancellor's relief fund के लिये देकर सम्मानित किया। स्टेज पर बच्चों ने अपने माता पिता को फूलों के हार पहनाकर सम्मानित किया और दण्डवत प्रणाम किया।

देवधर्म से जुड़े हुए अध्यात्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रता श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विषय पर अपने भाव व्यक्त किये। उन्होंने माता पिता और बच्चों के आपसी संबंधी में गिरावट आने के कारणों को उजागर करते हुए इस बढ़ती हुई बीमारी का सही इलाज भी बताया।

इसके बाद एक सामूहिक गीत "माँ बाप का दिल न तुम यूँ दुखाओ" ने सबकी आँखें नम कर दी।

सेंटर के विद्यार्थियों रमनदीप एवं सोना ने बताया कि किस प्रकार भगवान देवात्मा माता पिता एवं बच्चों में आदर्श संबंध स्थापित करने में सहायक होते हैं।

माँ को समर्पित हिमाचली गीत ने सबका दिल छू लिया। कोचिंग सेंटर के शिक्षक श्री अश्विनी ओहरी द्वारा निर्देशित नाटक "एक कोशिश", में कोचिंग सेंटर के छात्रों ने सबको अपने अभिनय से मंत्रमुग्ध कर दिया। नाटक के ज़रिये दिखाया

गया कि माँ बाप और बड़े भाई बहन किस तरह छोटों के लिये त्याग और कुर्बानी की मिसाल बन जाते हैं।

"माता पिता की सेवा दिल से किया करेंगे। नक्शे कदम पर गुरू के अपने चला करेंगे" बोल वाले इस अति भावुक गीत ने सबको प्रेरणा दी।

कोचिंग सेंटर के छात्र-छात्राओं उनके अभिभावकगण और कई जानी मानी हस्तियों से खचाखच भरे टैगोर थियेटर में पैर रखने की जगह न थी। चार घंटे तक चलने वाले इस कार्यक्रम में दर्शक बंधे बैठे रहे। कई ऐसे छात्र और छात्राओं ने भी भाग लिया और स्टेज पर एकल गीत गाए जिन्होंने कभी स्टेज पर पहले आने की हिम्मत भी नहीं की थी।

माता पिता ने डा. खेड़ा द्वारा विद्यार्थियों में अच्छे मूल्य और संस्कार पैदा करने के प्रयास की बेहद सराहना की। उनका मानना था कि आज के Materialistic Environment में बच्चों पर शिक्षा के अलावा इस क्षेत्र पर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है तथा डा. खेड़ा का यह प्रयास ही अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

छात्र आशुदीप के पिता हरकीरत सिंह ने भी अपने अनुभव Share किये और बच्चों को माँ बाप का सम्मान करने की शिक्षा दी।

अंजना नाम की छात्रा ने एक बहुत ही धार्मिक गीत पेश किया जिसके बोल थे-'माँ प्यारी माँ गोद में तेरी, खेला बचपन मेरा.....।"

अंत में डा. खेड़ा ने सबका धन्यवाद किया बच्चों में बादाम बाँटे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि जब तक हम समाज में अपने बड़ों, विशेषकर माता पिता के प्रति सम्मान और आदर की भावना नहीं पैदा करते तब तक सच्ची खुशियाँ और सुख नहीं पा सकते। उनके द्वारा सुनाई गई कहानी- "एक गिलास दूध" ने सबके हृदय को छू लिया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts